दिनांक :- 01-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- 12th

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास (अनुशांगिक)

सेमेस्टर :- तृतीय

पत्र :- एक

अध्याय :- कांस्य काल :- हड़प्पा एवं सिंधु घाटी की सभ्यता

सुत्कागेनडोर - पाकिस्तान के मकरान में समुद्रतट के किनारे स्थित यह सैन्धव सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है इसकी खोज 1927 ई० में स्टाइन ने की। 1962 ई० में जार्ज ने इसका सर्वेक्षण कर यहाँ से दुर्ग, बन्दरगाह तथा निचले नगर का पता लगाया। इसका दुर्ग एक प्राकृतिक चट्टान के ऊपर स्थित था। इसकी दीवार में बुर्ज तथा द्वार भी बनाये गये हैं। यहाँ की बस्ती के आकार - प्रकार से सूचित होता है कि मोहनजोदड़ो तथा कालीबंगन जैसा यह कोई बड़ा नगर नहीं है।

Scanned with CamScanner

अपितु इसका महत्व एक बन्दरगाह के रूप में था।
सिंधु तथा मेसोपोटामिया के बीच होने वाले समुद्री
व्यापार को सुगम बनाने ताम्र निर्मित बाणाग्र, ताम्रनिर्मित ब्लेड
के टुकड़े, मिट्टी की चूड़िया तथा खिलौने ठीकरे आदि
है। किंतु यहां से कोई भी मुहर अथवा अन्य खुदी हुई वस्तु
नहीं मिलता है।
सुत्कागेनडोर के पूर्व में स्थित सोत्काकोह स्थल भी
है जिसकी खोज 1962 में डेल्स द्वारा की गयी थी। यहां
से दो टीले मिलते है। इसका आकार-प्रकार भी सुत्कागेन
डोर जैसा ही था! कुछ मिट्टी के बर्तन मिलते हैं जो
सैंधव बर्तनों के समान है।

बालाकोट—
कराची से करीब 88 किलोमिटर की दूरी पर बलूचिस्तान
के दक्षिणी तटवर्ती पट्टी पर स्थित यह स्थल सैंधव
काल में एक बन्दरगाह के रूप में कार्य करता था। 1979-81
के बीच डेल्स ने यहां उत्खनन कार्य करवाया। यहाँ से

प्राक् सैंधव तथा विकसित सैन्धव सभ्यता के अवशेष मिले हैं। इसकी नगर योजना सुनियोजित थी। भवन कच्ची ईंटों से बनते थे जबकि नालियाँ पकी ईंटों की बनाई जाती थी। भवनों में कमरे, आँगन, चूल्हे आदि होते थे। गोले, बाणाग्र, ताँबे, काँस, मिट्टी आदि के ठीकरे तथा सेलखड़ी की मुहरे खुदाई में मिली है। बालाकोट का सबसे समृद्ध उद्योग सीप-उद्योग (Shell-Industry) था। हजारों की संख्या में सीप की बनी चूड़ियाँ एवं टुकड़े यहाँ से मिले है। संभव है बालाकोट इनके निर्यात का प्रमुख केन्द्र रहा हो।

अल्लाहदीनो

सिंधु तथा अरब सागर के संगम से करीब सोलह किलोमीटर उत्तर-पूर्व तथा करांची से चालीस किलो मीटर पूर्व में यह स्थित है। 1982 में फेयर सर्विस ने यहाँ के टीले का उत्खनन करवाया था। यहां से व्यवस्थित

नगर-नियोजन के साथ-साथ बड़ी संख्या में कलात्मक अव शेष प्राप्त हुए है। भवन वर्गाकार अथवा आयताकार है तथा कई खण्डो में विभाजित है। दीवारो की नीव तथा नालियाँ पत्थर की बनी है। कलात्मक अवशेषो में ताँबे की वस्तुये, सोना-चाँदी के आभूषण, मणिक्य के मनके तथा सैन्धव प्रकार की मुहरें उल्लेखनीय हैं। मिट्टी की बनी एक खिलौना गाड़ी भी मिलती है। संभवतः यह एक बन्दरगाह नगर था।

कोटदीजी —

पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में स्थित इस स्थल की खुदाई फजल अहमद खाँ द्वारा 1955 तथा 1957 में करवाई गयी थी। यहां प्राक् सैन्धव तथा सैन्धव स्तर मिलते है। प्राक् सैन्धव बस्ती में पत्थर किलेबन्दी के साक्ष्य मिले है। नगर-नियोजन सुव्यवस्थित थी। प्राप्त कलात्मक अवशेषो में विशिष्ट प्रकार के चित्रित मृद्भाण्ड, सादी तथा रंगीन चूड़ियाँ, पत्थर के बाणाग्र, तिकोने ठीकरे, माता देवी की मूर्तियाँ, पत्थर

की थाली, मनके, कांसे की अंगूठियां तथा सेलखड़ी की

बनी दो मुहरें महत्वपूर्ण है।

जम्मू से करीब 28 किलोमीटर की दूरी पर चेनाब नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित यह विकसित हड़प्पा संस्कृति का सबसे उत्तरी स्थल है। 1982 में जे० पी० जोशी तथा मधुबाला ने इसका उत्खनन करवाया था। यहां से तीन सांस्कृतिक स्तर - प्राक सैंधव, विकसित सैन्धव एवं उत्तरकालीन सैन्धव - प्रकाश में आये है। हड़प्पा कालीन मृदभाण्ड मिलते है। मिट्टी के ठीकरे, चर्ट ब्लेड, हड्डी के नुकीले बाण व कांस्य निर्मित पेंचदार पिन तथा एक आधी-अधुरी मुहर आदि मण्डा के सैन्धव स्तर से संबंधित कुछ अन्य अवशेष है।

बनावली

हरियाणा के हिसार जिले में स्थित इस स्थल का उत्खनन 1973-74 में आर० एस विष्ट द्वारा करवाया गया। यहां से संस्कृति के तीन स्तर - प्राक सैन्धव, विकसित

सैन्धव तथा उत्तर सैंधव प्रकाश में आये हैं। प्राक् सैन्धव स्तर से भी नगर नियोजन का साक्ष्य मिलता है। ज्ञात होता है कि प्रारंभ से ही यहाँ के निवासी अपने घर सीधी दिशा में बनाते थे आगे चलकर दुर्ग, प्राचीर एवं निचले नगर की अवधारणा भी विकसित हो गयी। इस चरण से एक पत्थर के बाट की खोज भी महत्वपूर्ण है। सैन्धवकालीन स्तर की नगर योजना अत्यन्त सुनियोजित थी। यहाँ दुर्ग तथा निचला नगर अलग-अलग न होकर एक ही प्राचीर युक्त घेरे में बनाये गये थे। दुर्ग की अलग से किलेबन्दी की गयी थी। दुर्ग की दिवारें 5.4 मीटर से लेकर 7 मीटर तक चौड़ी थी। यहाँ के भवनों में एक केन्द्रीय प्रांगण तथा उसके चारो ओर कई कमरे होते थे यहाँ की सड़के नगर को तारांकित (Star Shaped) भागों में विभाजित करती है। कभी-कभी भवनों में मिट्टी का लेप लगाया जाता था। एक मकान से धावन पात्र (wash-basin)

Scanned with CamScanner

लगा हुआ मिलता है। यहाँ से मुहरे तथा बटखरे भी मिले हैं। इससे सूचित होता है कि यह किसी धनी सौदागर का आवास रहा होगा। एक दूसरे बड़े मकान से सोने लाजवर्द तथा कर्नीलियन के मनके, छोटे बटखरे तथा एक ऐसी कसौटी मिली है जिस पर विभिन्न रंगो की सोने की परतें चढ़ी हैं। इन सबसे सूचित होता है कि यहाँ किसी जौहरी का आवास था। इस प्रकार जैसा कि मकानों के साज सामान से पता चलता है, बनावली समृद्ध लोगों का नगर था। बनावली के कई मकानों से अग्निवेदियाँ मिलती है। इनके साथ अर्धवृत्ताकार ढांचे हैं जिसके आधार पर कुछ विद्वान यहाँ मंदिर होने की संभवाना व्यक्त करते हैं। यहां की मोटी दीवारें के बीच आले (ताख) बनाये गये हैं। प्रायः सभी मकानों के सामने चबूतरे बने होते थे। खुदाई में प्राप्त अन्य वस्तुओं में मृद्भाण्ड है।

Scanned with CamScanner